वैश्विक धरातल पर हिन्दी की पैठ

नलिनीष मिश्र
एअरफोर्स स्कूल
बमरौली, प्रयागराज
फोन - 9935322774
ईमेल – nalnishmishra95@gmail.com

आज हम वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर चुके हैं। व्यापार के लिए देश की सीमाएं टूट रही हैं। वह राष्ट्रीय कंपनियां विभिन्न देशों में जाकर अपने उत्पादों की खपत के लिए स्रोतों की सतत तलाश कर रही हैं। स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में बाजार एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में उभरकर सामने आया है। विश्व बाजार में इस परिदृश्य में ज्ञान विज्ञान की सभी शाखाएं मांग और आपूर्ति के नियम के अनुसार खपत के संभावनाओं के द्वार खटखटा रही हैं। इस प्रक्रिया में आवागमन, संचार और तमाम माध्यमों पर भारी आवाजाही हो रही है। विज्ञान के चमत्कारों ने देश की दूरियां कम कर दी हैं, संदेशों को पहुंचाने का समय कम कर दिया है। इसलिए यात्राओं और संदेशों की गति बेहिसाब बढ़ गई है। महीनों यात्रा के बाद विदेश जाना अब घंटे में सिमट आया है। अब पलक झपकते ही इंटरनेट और सेल्यूलर सेवाओं के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में संदेश पहुंचाना बहुत आसान हो गया है। इस तेज गति संचार साधनों में भाषा की भूमिका बहुत अहम हो उठी है। इसलिए हम देखते हैं कि दुनिया भर की बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपना उत्पाद बेचने के लिए हिंदी और भारतीय भाषाओं का सहारा ले रही हैं।

अमेरिका से भारत दौरे पर आए माइक्रोसॉफ्ट के प्रमुख बिल गेट्स ने मुंबई में कहां भारत को हिंदी सॉफ्टवेयर की आवश्यकता है और यह आवश्यकता पूरी करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट तैयार है। उनके इस वक्तव्य को भारत के सभी भाषाओं के अखबारों ने प्रमुखता से छापा। दो वर्षों के भीतर ही उन्होंने हिंदी और भारतीय भाषाओं के कंप्यूटर बाजार में लाए, जिनमें पहली बार परिचालन प्रणाली भी हिंदी में है। इस तरह हिंदी के महत्व को विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया। क्षेत्रीय आर्थिक फोरम के कार्यक्रम में 20 अप्रैल, 2007 को बिल गेट्स ने चीन में कहा कि - " तकनीकी विकास का भविष्य बेतिया के पास होगा।" कंप्यूटर के क्षेत्र में भारत का योगदान सर्वविदित है। आर्थिक विकास का भावी केंद्रीय दिए सिया को कहा जा रहा है तो हिंदी की भूमिका और महत्वपूर्ण हो उठेगी।

विदेशों में लगभग 154 देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इसमें अप्रवासी भारतीयों के अलावा स्थानीय छात्र भी हिंदी का अध्ययन करते हैं। एक समय था जब हिंदी का अध्ययन साहित्य संस्कृति और एक भाषा के रूप में प्रमुखता से किया जाता था। पर आज हिंदी का एक व्यवसायिक व्यवहारिक भाषा के रूप में भी अपनाई जा रही है। साहित्य के माध्यम से अपनी संस्कृति, मान्यताओं और भावनात्मक धरोहरों को अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया जाता है, वही रोजी रोटी के लिए प्रयोजनमूलक हिंदी को अपनाया जा रहा है। विदेशों में हिंदी, सांस्कृतिक दूत का काम भी करती है। कई विदेशी विद्वान हिंदी की विशेषता की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने इस भाषा पर अपना प्रभुत्व सिद्ध किया। उन्होंने हिंदी में रचनाएं की। साथ ही, हिंदी से अपनी

भाषा में और अपनी भाषा से हिंदी में अनुवाद किए। इस तरह हिंदी ज्ञान और साहित्य संस्कृति के आदान प्रदान का माध्यम बन गई।

विदेशों में हिंदी की स्थिति को तीन वर्गों में देखा जा सकता है। पहले वर्ग में वे लोग आते हैं जो जीविकोपार्जन के लिए पीढ़ियों पहले भारत से विदेश आ बसे। हिंदी को अपनी अस्मिता के साथ उन्होंने जोड़े रखा। इन देशों में मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, ट्रिनिडाड, गुयाना आदि देशों को शामिल किया जा सकता है। मॉरिशस के अभिमन्यु अनत पचास से अधिक हिंदी पुस्तकों के लेखक हैं। वे हिंदी के प्रमुख लेखकों में माने जाते हैं। हिंदी भाषा में वह मॉरीशस के जनजीवन को शब्दबद्ध कर रहे हैं। इनके अलावा कृष्ण बिहारी मिश्र, रामदेव धुरंधर आदि प्रमुख उपन्यासकार हैं। साथ ही सोमदत्त बखोरी, हेमराज सुंदर, राजवंती अजोधिया आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं। मॉरीशस में ' आर्योदय', 'आक्रोश', और 'इंद्रधनुष' नामक हिंदी पत्रिकाएं नियमित प्रकाशित होती हैं। फीजी में पं. कमला प्रसाद मिश्र, पं. काशीराम कुमुद, बाबू कुंवर सिंह, गुरुदयाल शर्मा के नाम सुपरिचित हैं। सूरीनाम में अमर सिंह रमण, जीत नारायण, सूर्य प्रसाद वीरे प्रमुख नाम हैं। इन देशों में हिंदी भाषी भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या इतनी अधिक है कि वे वहां की राजनीति, प्रशासन और सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग है। वे हिंदी के लिए बहुत ही योगदान दे रहे हैं। संभवतः यही कारण होगा कि दूसरा और चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस में और पाँचवा ट्रिनिडाड मेंआयोजित किया गया। विश्व समुदाय के सामने हिंदी की व्यापक स्वीकृति के लिए यह प्रभावी प्रयास रहे हैं।

दूसरे वर्ग में भारत के पड़ोसी देश हैं, जहां अनायास ही हिंदी, भाषा के रूप में विद्यमान है। इन देशों में नेपाल, भूटान, ब्रम्हदेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, चीन आदि देशो का समावेश हो सकता है।

तीसरे वर्ग में ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, बेल्जियम, चेकोस्लोवाकिया, रूस, जापान आदि देशो को रखा जा सकता है। इन देशों में भारतीयों की संख्या काफी बढ़ रही है। व्यापार रोजगार आदि क्षेत्रों में भारतीय अप्रवासियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। साथ ही, इन देशों के हिंदी के विद्वान काफी उल्लेखनीय योगदान कर रहे हैं।

अपनी भाषा के प्रति भारत में उदासी जैसे दौर में विदेशी साहित्यकारों के हिंदी के विकास में योगदान कुछ विशेष भले लगे, लेकिन भारत से बाहर हिंदी के प्रति लोगों का रुझान निरंतर बढ़ रहा है। भूमंडलीकरण के इस दौर में वाणिज्य और व्यापार की परियां देशों की सीमाएं लांघ रही है। उत्पादन और बाजार का तालमेल बिठाने के लिए उपभोक्ता को रिझाने के लिए विज्ञापन एजेंसियां एड़ी चोटी का पसीना एक कर अरबों के बजट का वारा न्यारा कर रही हैं।

हिंदी के अध्ययन की सुविधा वर्तमान में भारत से बाहर विश्व में कई विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है। एक सर्वेक्षण के अनुसार अमेरिका में 113 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिंदी अध्ययन के केंद्र हैं, जिनमें से 13 तो शोध स्तर तक के हैं। हाल ही में अमेरिका की पेंसिलवेनिया यूनिवर्सिटी ने एम.बी. ए. केछात्रों को हिंदी का 2 वर्षीय कोर्स अनिवार्य कर दिया है, ताकि अमेरिका को हिंदुस्तान में व्यापार बढ़ाने में भाषा संबंधी कठिनाइयां ना हों।

हिंदी में कई विदेशी भाषाओं के शब्द इस तरह रच बस गए हैं कि उन्हें हिंदी से अलग करना अब लगभग असंभव सा हो गया है। अंग्रेजी से आए कैमरा, फुटबॉल, डायरी या पश्तों से आए अचार, न कलियां पठान जैसे शब्द हों या कि अरब भाषा से आए तारीख, वकील, आदमी, शराब, अमीर जैसे शब्द हों, इन शब्दों ने अब हिंदी में मौलिक पहचान बना ली हैं। जिस तरह विभिन्न भाषाओं से शब्द हिंदी में आए और शब्द संपदा बढ़ती चली गई इसी तरह विदेशी विद्वानों ने हिंदी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। साहित्य संस्कृति और भाषा का अन्यान्य संबंध होता है। कई विदेशी साहित्यकारों ने हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया।

हिंदी भाषा और साहित्य के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले फादर कामिल बुल्के का योगदान अमर रहेगा . इनके द्वारा तैयार किया गया अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश सर्वाधिक ख्याति प्राप्त संदर्भ ग्रंथ है। अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय शब्दों के लिए यह श्रेष्ठ प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है।

फादर कामिल का जन्म बेल्जियम के गांव रांपस में 1 सितंबर, 1909 को हुआ। घरवाले उन्हें इंजीनियर बनाना चाहते थे। सन् 1930 में उन्होंने लवैन विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल कर ली, पर उनका मन वहां नहीं लगा। फिर 1932 में उन्होंने दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया ।यही उनका परिचय भारतीय दर्शन से हुआ और उन्होंने भारत आना तय किया। सन् 1935 में हुए भारत आए। सन् 1936 में उन्होंने हिंदी सीखना शुरू किया। हिंदी के प्यार के चलते वे संस्कृत से भी जुड़ गए। बाद में सन् 1945 में उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से संस्कृत की डिग्री हासिल की। बाद में, उनकी पुस्तक 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' के रूप में प्रकाशित हुई। उन्होंने अध्यापन अपनाया और झारखंड के रांची के सेंट जेवियर्स कॉलेज से जीवन पर्य जुड़े रहें ।उन्होंने बाइबल का ' नील पक्षी' नाम से सन् 1978 में अनुवाद प्रकाशित हुई। छोटी बड़ी पुल 29 पुस्तके उनकी प्रकाशित हुई।

फादर कामिल बुल्के का कार्य मुख्यतः कोश निर्माण, अनुवाद और हिंदी शोध से संबंधित रहा। तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ के रूप में उनका ख्याति रही। वह भारत और हिंदी के प्रेम में इतने सराबोर हो गए की सन् 1950 में उन्होंने भारतीय नागरिकता ग्रहण कर भारत के ही हो गए। भारत सरकार ने उनकी हिंदी के प्रति तन्मयता को देखते हुए उन्हें 1972 से 1977 तक केंद्रीय हिंदी समिति का सदस्य बनाया। भारत सरकार ने 1974 में उन्हें पद्म भूषण से अलंकृत किया। सन् 1973 में बेल्जियम सरकार ने भी अपने इस पूर्व नागरिक को रॉयल एकेडमी का फेलो बनाकर सम्मानित किया। हिंदी के इस समर्पित व्यक्तित्व का 1983 में देहावसान हो गया, लेकिन अपनी कृतियों, हिंदी दफ्तरों में निरंतर अपनी सार्थक उपलब्धियों की याद दिलाते रहेंगे। डॉ. रूपर्ट इंग्लैंड में रहकर हिंदी सेवा में जुटे हैं। भारत भवन की खुली रंगशाला में उनसे मुलाकात हुई। श्कलेसूरत से अंग्रेज, पर कुर्ता पजामा और भारतीय चप्पल में वे भारत आए सैलानी लगते। जैसे ही बेलना शुरू करते हैं हिंदी में, स्पष्ट और सटीक हिंदी उच्चारण, हिंदी साहित्य में गहरी पैठ और हिंदी भाषा का व्यापक ज्ञान अनायास ही उनके कंठ से उमड़ पड़ता है। रूपर्ट स्नेलने 17 वें वर्ष में भारतीय शास्त्रीय संगीत सुन और हिंदी के माध्यम से आनंद हासिल करने का निश्चय किया। सन 1974 में विशेष

प्रवीणता के साथ हिंदी में बी. ए. किया और 1984 में हिंदी में पीएचडी हासिल की। पहले हिंदी के व्याख्याता हुए और बाद में लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड आफ्रिकन स्टडीज में हिंदी के रीडर और विभागाध्यक्ष बने।

डॉ. रीपर्ट स्नेल मैं यशपाल की कहानी उपदेश का अंग्रेजी अनुवाद किया। साथ ही भारतीय साहित्य और संस्कृति से संबंधित कई अध्यायनपूर्ण लेख हिंदी और अंग्रेजी में लिखे। सन 1981 में प्रेमचंद की कहानी 'रामलीला' का अंग्रेजी में उनका अनुवाद 'विकली' में छपा। सन 1989 मैं हिंदी पर उनकी एक पुस्तक अंग्रेजी में इंग्लैंड से छपी। हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा का अंग्रेजी अनुवाद इन ' दि आफ्टरनून ऑफ टाइम्स' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। धर्मवीर भारती की पुस्तक अनुप्रिया का अंग्रेजी अनुवाद भी उन्होंने किया है। 17 वें वर्ष में हिंदी सीखने का प्रारंभ और 50 वर्ष की आयु में तमाम उपलब्धियां इस बात की गवाह है कि उन्होंने पूरे समर्पण के साथ हिंदी को अपनाया है। अपने उच्चारण को सटीकता सौपने के लिए उन्होंने मथुरा, वाराणसी, दिल्ली, आगरा की निवासी यात्राएं कीं। मूल रूप से हिंदी में कविताएं भी लिखते हैं। स्वभाव से हास्य व्यंग का पुट लिए रूपर्ट स्नेल ने जब एक फोटो प्रकाशन के लिए भेजा तो टिप्पणी की "इस पत्र के साथ मैं अपनी एक बेवकूफ तस्वीर भेज रहा हूं, जिसमें मैं पंडित देखने की बहुत कोशिश कर रहा हूं - गंभीर मुद्रा, पुस्तकों ग्रंथों पथियोंसे घिरा हुआ...." साथ ही 2 पंक्तियां लिख दी -

" ज्यों-ज्यों नर मल घट बढैं, त्यों-त्यों निज अनुमान

कहत अद्वैतिन राम हूँ, डार्लिन हो हनुमान"

दो तीन दिन उनके साथ रहने का अवसर मिला। वह विनोदप्रिय व्यक्ति हैं। मुहावरेदार हिंदी बोलने में निपुण है। वे मजाक में कहते, मैं हिंदी के साथ इतना घुल मिल गया हूं कि कई लोग मुझे रूपर्ट स्नेल कहने के बजाय रूप सिंह कहना अधिक सही समझते हैं।

अंग्रेजी को भारत में हिंदी सीखने के लिए 1782 में गिलक्रिस्ट की नियुक्ति की गई थी। कोलकाता में सेंट विलियम फोर्ड कॉलेज कीस्थापना होने पर डॉ. गिलक्रिस्ट को हिंदुस्तानी विभाग का प्रथम प्रोफेसर नियुक्त किया गया। उन्होंने हिंदी मैनुअल और हिंदी स्टोरी टेलर नामक पाठ पुस्तकों का निर्माण किया। डॉ. मोनियर विलियम सन् 1890 में हिंदुस्तानी प्रायमर और प्रेक्टिकल हिंदुस्तानी ग्रामर का सन 1892 निर्माण किया। एक अन्य अंग्रेजी विद्वान हैं - फ्रेडरिक पिंकाट। ब्रिटेन के हिंदी प्रेमियों के बीच एक सम्मानित नाम है। सन 1887 में बाल दीपक नामक उनकी पुस्तक चार खंडों में प्रकाशित हुई।

डॉ. आदोनल स्मेकल चेकोस्लोवाकिया गणराज्य के नागरिक हैं। वह हिंदी जगत में अपनी कविताओं के लिए जाने जाते हैं। उनके 8 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. स्मेकल गोदान का चेक भाषा में अनुवाद भी किया है। वे भारत प्रेम और हिंदी समर्पण के लिए विख्यात रहे। हिंदी को अपनी दूसरी मातृभाषा के रूप में मानते रहे हैं।

जर्मनी के लोठार लुत्से हिंदी के विदेशी साहित्यकार के रूप में अत्यंत चर्चित नाम है। डॉ लुत्से हिंदी कविताओं का जर्मन में अनुवाद किया। डॉ. लुत्से नए हिंदी छात्रों के लिए एक पाठ्यपुस्तक भी तैयार की। उन्होंने अशोक वाजपेई और विद्या खरे की कविताओं का जर्मन में अनुवाद किया है। जापान में हिंदी को लोकप्रिय भाषा बनाने में निवाको कोईजुका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मिनाको ने हिंदी सिनेमा के माध्यम से हिंदी शिक्षण की व्यापक सामग्री तैयार की। रामायण को हिंदी पाठ्य सामग्री के तौर पर तैयार किया गया। उनके नेतृत्व में भारत के प्रमुख शहरों में हिंदी नाटकों का सफल मंचन किया गया है। प्रोफेसर क्यूमा दोई ने जापानी हिंदी और हिंदी जापानी शब्दकोश का निर्माण कर दोनों भाषाओं को एक दूसरे के करीब ला दिया है। इन्होंने गोदान का जापानी में अनुवाद किया।

इंग्लैंड में भारतीय लोगों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। एक सर्वेक्षण में तो यहां तक कहा गया कि लंदन की दूसरी भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी होती जा रही है। क्योंकि भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न देशों के लोग अपनी पहचान के लिए हिंदी का उपयोग कर सुरक्षित अनुभव करते हैं। भारत के अलावा पाकिस्तान, नेपाल, बंगला, म्यानमार, श्रीलंका आदि देशों के नागरिक हिंदी में बोलने को प्राथमिकता देते हैं। अपरिचित होने के बावजूद वे आपस में संवाद के लिए हिंदी का प्रयोग करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव बनाने वालों की भाषा भी महत्वपूर्ण हो उठती है। इंग्लैंड में हिंदी की सघन गतिविधियां इसका प्रमाण है।

ब्रिटेन में हिंदी की तमाम संस्थाएं भी है। यू. के. हिंदी समिति का संचालन श्री पद्मेश गुप्त श्रीमती उषा राजे सक्सेना करते हैं। बरमिंघम में गीतांजलि बहुभाषीय समुदाय नामक संस्था डॉ कृष्ण कुमार सुश्री नितिक्षा आनंद की देखरेख में चलती है। भाषा संगम का संचालन महेंद्र वर्मा करते हैं। साथ ही अंतरराष्ट्रीय हिंदी कवि सम्मेलन, भाषा सम्मेलन आयोजित होते हैं। छठा विश्व हिंदी सम्मेलन लंदन में आयोजित किया गया।

पिछले 3 वर्षों के कथाकार तेजेंद्र शर्मा के नेतृत्व में इंग्लैंड में हिंदी साहित्य की गतिविधियां बहुत तेज हो गई है। लंदन में वह अंतरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान का आयोजन करते हैं। इस अवसर पर विभिन्न गोष्ठियां और कवि-सम्मेलनों के संयोजन सहित लंदन के और भारत से जाने वाले साहित्यकारों का महत्वपूर्ण विचार विमर्श होता है। इंग्लैंड में कई ऐसे साहित्यकार हैं जो अपने वर्तमान को हिंदी में शब्दबद्ध कर रहे हैं। सत्येंद्र श्रीवास्तव भी उनमें से एक हैं। लंदन में हिंदी रचनाकारों का बड़ा कारवां है। सूरज प्रकाश ने कथा लंदन नामक एक कथा संग्रह का संपादन भी किया है। इसमें भारतेंदु विमल, शैल अग्रवाल, कैसर तमकीन,दिव्या माथुर, गौतम सचदेव, अरुण अस्थाना, उषा राजे, संजीव, ज्ञान चतुर्वेदी को नेहरू सेंटर, लंदन में सम्मानित किया जा चुका है। सारा विश्व उदारीकरण और वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहा है।

हिंदी के विकास में उन विदेशियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनके पूर्वज भारतीय रहे। इन देशों में मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, ट्रिनिडाड, गुयाना आदि देश मुख्य हैं । इन देशों में हिंदी भाषियों की तरह मूल रचनाकार हैं। इन देशों में हिंदी में पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है और लेखक रचनाकार अपने अपने देश की पत्र पत्रिकाओं के साथ-साथ भारत की हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपते रहे हैं ।

विश्व समुदाय के सामने हिंदी की व्यापक स्वीकृति के लिए प्रभावी प्रयास जारी हैं। विदेशी विद्वानों, साहित्यकारों द्वारा हिंदी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान विशेष उल्लेखनीय है। जितनी बड़ी मात्रा में विदेशों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन व प्रचार प्रसार हो रहा है। इससे यह उम्मीद बलवती होती जाती है की हिंदी वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में अपनी पहचान की व्यापकता निरंतर बढ़ती रहेगी।